SHRI KHURSHED ALAM KHAN:

I quite appreciate the hon. Minister
has inherited a certain legal difficulty
and legacy from the past which has
been made richer during his time by
the prolonged negotiations. But may
I know from him whether at least he
will fix a uniform price and uniform
terms and conditions for the supply of
gas, whether it is supplied by these
agents or directly by the companies?

SHRI H. N. BAHUGUNA: All I can assure him is that such a thing is in mind and very soon the whole thing will be brought under a uniform system. Much time is not wasted in doing this.

DR. RAFIQ ZAKARIA: May I draw the attention of the hon. Minister to the plight of the consumers in this regard, as far as the city of Bombay is concerned? As soon as I resigned my Ministership. I know with what great difficulty I could get one cylinder and this process is going on. Therefore, simple elimination of certain agents is not going to solve the problem. So, Sir, I would like to know from the honourable Minister-I have raised this question last time alsowhether, in the interest of the consumers, it would not be better if he takes over the Bombay Gas Company and if he sees that alongwith the cylinders, supply also becomes available so that all the blackmarketing and the delay and the difficulties that take place are eliminated.

SHRI H. N. BAHUGUNA: Sir, let me make the point very clear: The Bombay Gas Company is a municipal venture.

DR. RAFIQ ZAKARIA: No, it is not a municipal venture; it is a private venture.

SHRI H. N. BAHUGUNA: It is looked after by the Municipal Board and it is under a licence given by the State Government to the Municipality and the Government has nothing to do with that Company. We do not propose to take it over because most

of it is junk and we do not propose to take over any junk.

DR. RAFIQ ZAKARIA: Sir, I would 1 like to point out one thing. As the Minister for Urban Development, I had dealt with this problem. But the Minister is not properly informed when he says that it is a municipal concern of the State Government. Simply because the Municipal Board has to get a licence from the State Government or simply because the State Government has to give the licence, it does not mean that it becomes the responsibility of the municipality or the State Government only. The only question that is involved is one of funds and, Sir, if he gets the junk, he will get it for a song and if he gets it for a song, it would be good because the entire distribution will be at his disposal and I think that, in the interest of the consumers, he should be bold enough and he is an able Minister and we all appreciate his courage

SHRI H. N. BAHUGUNA: Sir, we have gone into this question and found that the existing Bombay Gas Company, as it is, is not worth being touched even with a barge-pole by us. But, if the State Government wants to do something about it, we will have no objection.

MR. CHAIRMAN: All right. Next Question. Mr. Bhishma Narain Singh.

रेलपथ का नर्वाकरण

\*694. श्री भीष्म नारायण सिंह †: श्री खुरशीद ग्रालम खान : श्री इब्राहीम कलानिया : श्री भगवान दीन :

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि रेल पथ के काफी बढ़े भागों के नवीकरण का कार्य काफी

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Bhishma Narain Singh.

الم دم و

पहले हो जाना चाहिये था ग्रौर ऐसे रैंलमार्ग गाड़ियां चलाने के लिए ग्रसुरक्षित समझे जाते हैं ; ग्रौर

(ख) यदि हां, तो इस दिशा में सरकार क्या कदम उठाने का विचार रखती है ?

## +[Renewal of permanent way

\*694. SHRI BHISHMA NARAIN SINGH: †

SHRI KHURSHED ALAM KHAN:

SHRI IBRAHIM KALANIYA: SHRI BHAGWAN DIN:

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that fairly large portions of permanent way are overdue for renewal and that such tracks are considered unsafe for operational use; and
- (b) if so, what steps Government propose to take in this direction?]

रेल मंत्री (प्रो० मधु दण्डवते): (क) श्रीर (ख) एक विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है।

## विवरण

(क) श्रौर (ख) यद्यपि यह सच नहीं है कि रेल मार्ग के बड़े भागों का नवीकरण काफी पहले हो जाना चाहिए था श्रौर ये भाग गाड़ी-परिचालन के लिए श्रमुरक्षित हैं, फिर भी स्थिति यह है कि भारतीय रेलों की लगभग 61,000 किलोमीटर मार्ग दूरी में से ट्रंक श्रौर मुख्य लाइनों के लगभग 6000 मार्ग किलोमीटर का प्राथमिक नवीकरण श्रपेक्षित हैं। रेल पथ के ऐसे भागों के नवीकरण का कार्यक्रम, प्रत्येक वर्ष निधियों की

उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए चरण-बद्ध स्राधार पर तैयार किया जा रहा है। तथापि रेलपथ के जिन भागों का नवीकरण स्रपेक्षित है, उनका स्रावश्यक नैमित्तिक नवीकरण करके उन्हें स्रच्छी हालत में बनाय रखा जाता है जिससे गाड़ियों का निरापद परिवालन सुनिश्चित हो सके।

भारतीय रेलों पर रेलपथ के नवीकरण सम्बन्धी काम को गित प्रदान करने के उद्देश्य से ग्रागामी वर्षों में रेलपथ के नवीकरण के लिए ग्रिधिक धन की व्यवस्था करने का प्रस्ताव है।

†[THE MINISTER OF RAILWAYS (PROF. MADHU DANDAVATE): (a) and (b) A statement is laid on the Table of the House.

## Statement

(a) and (b) Though it is not a fact that large portions of permanent way are overdue for renewal and that track on these portions is unsafe for operation of trains, out of about 61,000 route kms. of Indian Railways about 6000 route kms of trunk and main lines is due for primary renewal. Renewals of such portions of track are being programmed in phases every subject to the availability of funds. The portions of track due for renewal are, however, maintained in fit condition, by carrying out necessary casual renewals of track components so as to ensure safe operation of trains.

In order to step up the pace of track renewals on the Indian Railways, it is proposed to make increased funds available for track renewals during the coming years.]

श्री भीष्म नारायण सिंह : मान्यवर, माननीय मंत्री जी ने प्रश्नोत्तर में बताया है कि 61 हजार किलोमीटर मार्ग दूरी में से ट्रंक

<sup>†[ ]</sup> English translation.

<sup>†</sup>The question was actually asked on the floor of the House by Shri Bhishma Narain Singh.

श्रीर मुख्य लाइनों की लगभग 6 हजार किलोमीटर लाइन का प्राथमिक नवीनीकरण श्रपेक्षित है। तो मैं मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि स्रापने जो 6 हजार किलोमीटर फिक्स किया मार्ग नवीनीकरण के लिए यह किस स्राधार पर स्राप तय करते हैं कि किस मार्ग का नवीनीकरण पहले स्रपेक्षित है।

दूसरी बात, भ्रापने यह भी बताया है कि चरण-बद्ध कार्यक्रम भ्राप बनाते हैं निधि की उपलब्धि के भ्राधार पर । तो जो यह नवीनी-करण का चरण-बद्ध कार्यक्रम भ्राप तय करते हैं उसका भ्राधार क्या है ?

प्रो० मधु वण्डवते : श्रीमन्, जब रेल के बारे में हम जांच करते हैं तो ग्रल्ध्रा-सोनिक डिवाइस के जिरये रेलों में जो ग्रान्तरिक फ्लांज नहीं होती है उसके बारे में तलाण किया जाता है कि उसमें कैंक्स ग्राने की संभावना तो नहीं है ग्रीर ग्रल्ट्रा-सोनिक डिवाइस के जिरये यह पता लगाया जाता है कि इन फ्लाज की लम्बाई कितनी हो सकती है, उसके बारे में कैंलिब्रेटेड इंस्ट्रमेंट से पूरी मालमात मिलती है। यह जानकारी मिलने के बाद हमने तय किया है कि जितनी हमारे पास लाइन है मेन ग्रीर ट्रंक रूट्स की उसमें से 6 हजार किलोमीटर रूट की दूरी प्राइमरी रिन्यूवल के लिए ग्रावश्यक है। उसके ग्राधार पर यह तय किया गया है।

श्री भीष्म नारायण सिंह: जैसा आपने बताया कि चरण-बद्ध , फैजवाइज प्रोग्राम बनाते हैं तो उसका क्या आधार है। यह भी प्रापने बताया है कि हम फंड्स की अवेलि-बिलिटी, निधि की उपलब्धि के आधार पर इसको तय करते हैं। तो यह सेपटी का मामला है तो क्यों आप ऐसा नहीं कर सकते है कि प्राथमिक नवीनीकरण के जो कार्यक्रम बनाते हैं उसकी आवश्यकता को महसूस करके निधि को उपलब्ध करायें बजाय इसके कि निधि उपलब्ध हो उसके अनुसार रिन्यूवल करें?

प्रो० मधु दण्डवते : जब मैंने फेजज का जिक्र किया है तो हर वक्त हम यह देखते हैं कि जिस रूट पर ट्रेंफिक डेंसिटी ज्यादा है उसको हम प्राथमिकता देते हैं और वहां नवीनीकरण के काम को प्राथमिकता देते हैं। दूसरी बात यह है कि प्राइमरी रिन्यूवल्स जो होते हैं वह ट्रंक रूट और मेन लाइन पर होते हैं। वहां से पुरानी लाइट हटाने के बाद इनको हम कमडेंसिटी वाल क्रांड गेज, मीटर गेज, नैरो गेज पर लगाते हैं। तो इस साधार पर ट्रेंफिक डेंसिटी को प्राथमिकता देकर हम तय करते हैं कि कौन से रूट का नवीनीकरण हम पहले करें। उसके साधार पर यह तय करते हैं।

श्री भीष्म नारायण सिंह : मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि जो डिटेल्स दुर्घटनाओं की हैं उनसे आप ऐसा मानते हैं कि उनके यह भी कारण हो सकते हैं कि नवीकरण समय पर नहीं किया गया ?

प्रो० मधु दण्डवते : जैसा मैंने पहले एक मर्तवा बताया था कि जहां ट्रेक्स में बड़ी असुरक्षा है वैसी जगह पर, जैसे हड्डी पर कैंक ग्रा जाता है, श्रौर फैंक्चर हो सकता है, हमारा ऐसा ग्रनुभव है कि पिछले चंद महीनों में तीन रूटों पर इस प्रकार के फैंक्चर हुए हैं। इसकी वजह यह भी है कि वहां की रेलें भी खराब थीं ग्रौर वहां ट्रेफिक डेंसिटी भी ज्यादा थी। ग्रापने जो सुझाव दिया वह ध्यान में रख कर हम नवीकरण ग्रपने हाथ में लेते हैं।

SHRI KHURSHED ALAM KHAN: Sir, it is really difficult to share the optimism of the hon. Minister in this matter because a large number of rail fractures have been reported during the last one and a half years, and the Minister must be aware of it. Besides, I would also like to know why, on such a section as Bombay-Poona where you have the prestigious train like the Deccan Queen, it is also not allowed to run on certain sections of

that track because the track is not considered very safe. I would also like to know whether you are unable to buy these rails for lack of funds or it is due to the difficulty in arriving at the agreed price with the suppliers. If there was any difficulty in arriving at the agreed price, why was this matter was not submitted for arbitration, negotiations or mediation?

PROF. MADHU DANDAVATE: Sir, I would split this question into two parts. As far as the first part is concerned, I am neither an optimist as alleged by him nor am I a pessimist as I suspect him to be. But I am a realist. As far as the second part of the question is concerned, it is true that there are certain financial constraints. At the beginning of the Fifth Five Year Plan, about 2400 km. of backlog was there. At the beginning of the sixth Five Year Plan, the backlog of 6000 km., including something that is likely to come up, will be there. That would require an amount of Rs. 560 crores, nett. We have actually assigned Rs. 350 crores. Lastly there was the question about the difficulty coming up because we are not getting the allocation or difficulty about the price. Sir, both aspects are As far as the price structure is concerned, if there is some difficulty with the Bhilai Steel Plant and others from whom we are getting rails, we would leave the entire matter to the Finance Ministry, and with the cost accounting machinery they will decide about the price, and we are prepared to pay that without any argument at ail. That is the present position.

श्री इब्राहोम कलानिया : सभापति जी, मावनगर-राजकोट डिवीजन पर नेरोगेज, मीटरगेज जो रेल पथ है वह पुराना हो चुका है ग्रीर बड़ी माला में उसका नवीकरण नही हुग्रा है जिसके कारण लोगों पर खतरे की तलवार लटकती रहती है। मैं मली महोदय से यह जानना चाहता हूं कि इस डिवीजन के ग्रन्तगंत ऐसे कितने रेल पथ ग्रीर कीन-कौन से हैं जो काफी पुराने हो चुके हैं ग्रीर उनके नवीकरण के कार्यक्रम का ब्यौरा क्या है?

प्रो॰ मधु दण्डवते : जहां नवीकरण दैक्स का करना होता है वह दो तरह से होते हैं-एक प्राइमरी रेनुग्रल ग्रौर सैंकेण्डरी रेनग्रल। जिस डिवीजन का ग्राप जिक्र कर रहे हैं वह ब्रोड गेज नहीं मीटरगेज है जहां प्राइमरी रेनुग्रल हुए हैं ग्रौर ट्रैक्स हैं वहां सेकेप्डरी रेनुग्रल कर सकते हैं। जिस डिवीजन का जिक्र किया गया है वहां का पूरा हिसाब मैं नहीं दे सकता लेकिन ग्रापको यह बताऊंगा कि ट्रंक रूट श्रौर मेन-लाइन जो सारे देश में है उसमें से जितनी लम्बाई पर नवीनीकरण जरूरी है वह है ब्रोडगेज 3288 किलोमीटर, मीटरगंज 2847 किलोमीटर ग्रौर नेरोगंज 80 किलोमीटर है और दूसरी लाइन पर ब्रोडगेज 2103 किलोमीटर, 2668 किलोमीटर और नेरोगेज 1167 किलोमीटर है। कुल हिसाब यह है कि टोटल किलोमीटर रेनुयल के लिये है ब्रोडगेज 5391 मीटर, मीटरगेज 5515 मीटर श्रौर नेरो-गेज 1,247 किलोमीटर है। इन झांकड़ों से पता लगेगा कि करीब करीब मीटर गेज ग्रौर ब्रोड गेज, इन दोनों में रिन्युग्रल के ग्रांकडे एक ही हैं। लेकिन प्राइमरी रिन्युग्रल मे दिक्कत यह है कि हमें उनमें रेल रेल्स लाने पड़ेंगे ग्रीर सेकेण्डरी रिन्यूग्रल के लिये हमें रेल्स हटानी पड़ेंगी । उसका इस्तेमाल हम मीटर गेज में कर सकते हैं। जिस डिवीजन का उन्होने जिक्र किया है वहां पर भी काफी रिन्युग्रल की जरूरत है। 🦠 १८५ नीहरू 🕾

SHRI ANANT PRASAD SHARMA: Sir, the hon. Minister has stated that track renewal is undertaken under three conditions. Firstly, the tracts are tested; secondly, they take into consideration the density of the traffic and thirdly they examine the condition of the track and see whether they can do it on priority basis on the main line or other sections. I would like to know as to how these three categories are fixed. Suppose they find after testing that the route kilometer is more than 6000 kilometers, in that case will they stick to the figure laid down by him or will they go beyond that and even if funds are not available, they will find the funds, as he has said, from other places by reducing the expenditure on other items because this is more important than other work?

PROF. MADHU DÁNDAVATÉ: Sir, in addition to what I have stated earlier, there is one more factor which the hon. Member should take note of. Even before testing the track by ultrasonic devices, we know the general life of a track. For primary renewals, the life is 20 to 25 years and for secondary tracks, it is 25 to 30 years. Knowing when exactly the track was laid or the rails were manufactured, we tentatively know at what stage the life or a particular rail is. detection by ultrasonic devices gives us the facility of having the knowledge fractures that case likely to take place. He has also asked another question that is how we are going to stick only to 6000 route kilometers. In fact, that particular number has been arrived at on the basis of life span of lines and with the help of detecting instruments and if further detection indicates that more fractures are likely to take place on further routes, we will not stick to these 6000 kilometers. For instance, for the health of the population we will always go not by the fixed number of those who are suffering from diseases, but if more diseases are discovered, we have to treat them. In a similar manner, if more rails are detected which are likely to have fracture, then we will take action. In that event, we may have to go even beyond 6000 kilometers.

SHRI KALYAN ROY: What about the fractures in the Cabinet?

PROF. MADHU DANDAVATE: Fracture in the Cabinet is an internal problem. No ultrasonic device is required for that.

श्री सुग्दर सिंह भंडारी श्रीमन् संती महोदय ने ट्रंक रूट्स पर ब्रॉड गेज ग्रीर मीटर ुगेंज तथा नैरो गेज का माइलेज बताया है स्रौर यह बताया है कि किन लाइनों में नवीनी-करण की स्रावस्थकता है। मैं यह जानना चाहूंगा कि क्या कोई स्फेसिफिक सेक्शन्स हैं जहां पर इस प्रकार के डिफेक्ट स्राइडेन्टी-फाई किये गये हैं या माइल टू माइल इसें चीज का पता लगाया जाता है? मैं यह भी जानना चाहता हूं किं जब तक इन सेक्शन का रिन्यूस्रल नही हो जाता है, तब तक ऐसे कौन से प्रिवेंटिव मेजर्स लिये गये हैं—जैसे स्पीड को घटांना या इसीं प्रकार के दूसरें काम, जिनसे गाड़ियों का स्नावस्थक रूपा से एक्सीडेन्ट न हो स्रौर पैसेंजरों को खतरों का सामना न करना पड़े ?

प्रो० मधु बण्डयते : रेलों के सर्वेक्षण के बार्व जब हमें यह पता लगता है कि रेलों में कहीं पर कुछ दिक्कतें हैं या धोखा है या उनमें सेफ्टी कम है तो ऐसी जगहों पर दो काम हो सकतें हैं । पहला काम तो प्राइमरी रिन्युग्रल या निवीतिकरण का काम हो सकता है ग्रौर जब तक निवीतिकरण नहीं होता है तब तक रेल की रफ्तार कुछ सीमित रखनी पड़ती है । इस प्रकार से गाड़ियों की रफ्तार को सीमित करके सुरक्षा करने की कोशिश की जाती है ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : क्या ग्राप उन सेक्शन्स का नाम बता सकते हैं ?

प्रों० मधु दण्डवते : मैं यह बता सकता हूं कि नार्थ ईस्ट फटियर रेलवे में ऐसे सेक्शन्स है जहां पर रेल फक्चर के कुछ एक्सीडेक्ट हुए हैं । वेस्टर्न रेलवे में भी इस प्रकार के कुछ सेक्शन्स हैं इसी प्रकार से सेन्ट्रल रेलवे में भी कुछ जोन्स हैं । कुल मिलाकर इनकी संख्या 6 हजार किलोमीटर है ।

श्री सुन्दर सिंह भंडारी : क्या श्राप उन जोन्स का नाम बता सकते हैं जहां पर रेलों की स्थिति बहुत कमजोर है श्रीर उनको कब से श्राईडेंटिफाई किया गया है ? 25

<sup>1648</sup> श्रो० मध दण्डबते : इस बक्त मेरे पास उन सब सेक्शन्स के नाम नहीं हैं, लेकिन मैं धापको यह बता सकता हं कि 2-1-78 को नार्थ ईस्ट फ्रांटियर रेलवे की ग्रासाम मेल में रेल फ्रेक्चर की वजह से एक एक्सीडेंट हम्रा था, लेकिन उसमें कोई हानि नहीं हई। 30-1-78 को वेस्टर्न रेलवे में 89-डाउन में रतलाम ग्रौर भोपाल सेक्शन में इस प्रकार की तकलीफ हुई है। भ्रौर 11 डाउन दादर मद्रास एक्सप्रेस का एक्सीडेन्ट कुर्दुवाड़ी ट् मोलापूर सेवशन मे हुआ, यह तीसरा सेवशन है जहां पर इस प्रकार की हानि हुई है। इन तीनों सेक्शन्स का मैंते जिक्र किया है इसके इलावा दूसरे भी सेक्शंस हो सकते हैं . जिनकी सूचना इस सुमय मेरे पास नृहीं L. Jack है।

श्री कल्प नाथ राय: सभापति महोदय, रेलवे में दुर्घटनाश्चों के मुख्यतः दो कारण हैं। एक तो रेलवे देवस का ठीक न होना ं ग्रौर दुसरा रेलवे के मेटेनेंस डिपार्टमेंट का ठीक से कार्य न करना। वया मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि जो मेटेनेंस डिपार्टमेंट है उसकी बिल्कुल क्रिमिनल नेगलीजेंस के कारण बहत सी दुर्घटनाएं होती हैं, ग्रौर क्या मेटेनेंस डिपार्टमेंट के लोग ऐसा ही व्यवहार नहीं कर रहे हैं जैसा कि श्राजकल जनता पार्टी के नेता इस सदन के साथ व्यवहार कर रहे हैं ? क्या वे इनको ठीक करने के लिए कोई प्रयत्न करेंगे ?

प्रो० मधु दण्डवते : श्रीमन्, रेल के सवाल में राजनीति को लाया गया लेकिन मैं • ग्रपने जवाब में राजनीति नहीं लाना चाहता हं। मैं यह बतलाना चाहता हं कि यह कहना ठीक नहीं होगा कि यह सारे एक्सीडेट मेंटेनेंस की कमी की वजह से हो रहे है। इस सदन में मैंने दो तीन मर्तबा बताया है कि कितनी दुर्घटनाएं स्टाफ फेलयर्स के कारण हुई हैं, कितनी मेटेनेंस की वजह से श्रौर कितनी सिगनल फेलयर्स की वजह से हुई हैं। इन सब की लिस्ट मैंने सदन के सामने

रखी हैं। इसचिए यह कहना ठीक नहीं होगा कि मेंटैनेंस की तरफ ध्यान नही दिया गया इसलिए सारे एक्सीडेंट हो रहे है। ग्रलग स्रलग फेक्टर्स हैं स्रौर सब की तरफ हम ध्यान दे रहे हैं।

[ 21 AUG. 1978 ]

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन, माननीय मंत्री जी क्या यह बतायेंगे कि भतपर्ष सरकार की ग्रकर्मण्य नीतियों के कारण ही रेलवे में इतनी दुर्घटनाएं हुई है ग्रौर जो रेलवे की व्यवस्था में त्रटियां हैं यह तीस वर्ष के कांग्रेस पार्टी के कुशासन के कारण हैं ग्रौर जो भी बर्बादी हुई है, क्या यह उसी परिणाम नही है ? जितनी भी रेलवे दुर्घटनाएं हो रही है वे कांग्रेस के कुशासन के कारण हो रही है ? (Interruptions)

प्रो० मध दण्डवते : श्रीमन, मैं कांग्रेस का नाम नहीं लेना चाहता हूं। लेकिन कई मर्तबा मैंने यह बताया है कि पिछले 10-15 साल का यह ट्रेक रेन् श्रन्स का जो बैक-लाग रहा है उसकी वजह से तकलीफ हई है। मैंने म्रांकडे दिए थे म्रौर शायद माननीय सदस्य ने सूने नहीं । पांचवीं पंचवर्षीय योजना के शरू होने के समय 2400 किलो-मीटर का बैक-लाग था यह बढ कर ग्रब 6000 किलोमीटर हो गया है। हो सकता है यह पैसे की कमी का कारण रहा हो। यह बात सही है कि पुराना बैक-लाग है, लेकिन उसका इंतजाम हमें करना पडता है।

## Gas Distribution Agencies

\*695. SHRI GOVINDRAO RAM-CHANDRA MHAISEKAR: Will the Minister of PETROLEUM. CALS AND FERTILIZERS be pleased to state:

(a) whether Government have decided to fix the minimum and maximum number of gas connections to be distributed by one agency; if so, what are the details in this regard; and